

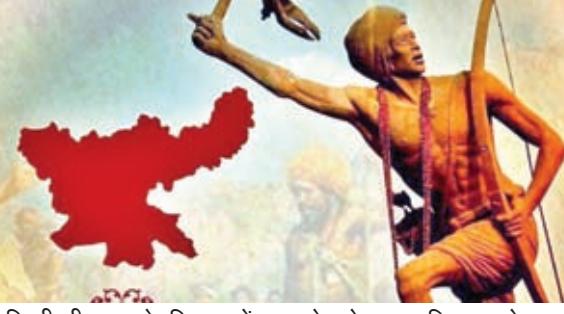
समय
संवाद

रणन्द्र

ज्ञारखण्ड की अपनी विशिष्ट संस्कृति निर्विवाद रूप से यहाँ की देशज आदिवासी संस्कृति है। दामोदर धाटी की गोद में हजारों वर्ष पूर्व पल्ली-बढ़ी। प्रकृति पर विजय नहीं बल्कि उसकी पूजा और उसके साथ सामंजश करनी सामुदायिकता एवं सामूहिकता पर आधारित, श्रम रस में रची परी, उत्तरवर्धमाण संस्कृति आदिवासियत की विशेषता है। यह सत्य है कि 19वीं सदी के पूर्वीद्वंद्व से ही बहिराचों की तेज लहर के कारण जनगणना की सांख्यिकी में उसकी आवादी का प्रतिक्रिया एवं सामूहिकता पर आधारित, श्रम रस में रची परी, उत्तरवर्धमाण संस्कृति आदिवासियत की विशेषता है। यह अनुरूप ज्ञारखण्ड के विविध रंगों के अनुरूप नाची-गाती, तुख-सुख ज्ञालती आदिवासियों-सदानों की एकरूप संस्कृति ज्ञारखण्ड के जंगलों में विकसित हुई। जिसे सभी ने अंगीकार किया।

ज्ञारखण्डी संस्कृति देशज सौन्दर्य का आलोक

स्थापना दिवस पर विशेष



किसी भी राज्य के विकास में उस प्रदेश के हर व्यक्ति का योगदान होता है। हम करून समाज है, हम पर्वती और प्रकृति के हर तर्वां का योगदान और अहसान खींकार करते हैं। हमारा मूल रघवाह ही है।

विशेष के श्रेष्ठ आवरण संरोप के साथ जुड़ा है।

लोक की विशिष्टताएं

ज्ञारखण्डी देशज संस्कृति की चार मुख्य विशेषताएं हैं, यथा-

प्रकृति के साथ सम्भाव

प्रकृति के साथ सहज सम्भाव जहाँ वैदिक धर्म अद्वैतवादी दर्शन के तहत हल्सोउड़ का उद्घोष करता हरेक जीव में ईश्वर के अंश की शाश्वत उपरिथित का रेखांकित करता, उन्हें पूजनीय मानता है।

गाव के निकट साल/शाल/साथू वृक्षों का पवित्र समूह ही सरन की शाश्वत उपरिथित का रेखांकित करता, एक समतावादी जीवन दृष्टि दर्शन भी अपने सरना वा आदिवार्म भी उसके आदिवासीपन के कारण ही ज्ञारखण्डी है। (आदिवासी अस्मिता अस्तित्व और ज्ञारखण्डी अस्मिता के सवाल पृ. 29)

दर्शन के साथ ताल मिलता दिखता है। नदियों, पर्वतों आदि में चेन्नतना तलाशने वाले सनायन वैदिक धर्म की भाँति ज्ञारखण्डी आदिवासी दर्शन भी निजीयों तक में ईश्वर की उपरिथित का अहसास करता है, उन्हें भूमी या वनस्पति के बहुत से मानवों से होता है।

गाव के निकट साल/शाल/साथू वृक्षों का पवित्र समूह ही सरन की शाश्वत उपरिथित का रेखांकित करता, एक समतावादी जीवन दृष्टि दर्शन भी अपने सरना वा आदिवार्म अस्मिता के सिद्धान्त और व्यवहार में अद्वैत है।

है। पहाड़, मरांग बुर्लबोंगा हैं, महोदेव-महादीनिया है। नदियाँ इक्किंचिंग के रूप में आराध्या हैं आदि।

ज्ञारखण्डी जन-जीवन के सारे पर्व त्योहार प्रकृति से जुड़े हैं चाहे वह सरहद हो या करमा, पागू हो या सोंहराय। आदिवासी समाज के लिए सारा जीवजगत वा वनस्पति जगत अच-नहीं हैं बल्कि अच्यन्दि है। वे अपने गोत्र की शुभ्रआत किसी जीवी या वनस्पति से मानते हैं और वे उनके लिए पवित्रा दोटम होते हैं।

ज्ञारखण्डी समाज की मान्यता सामुदायिक जीवन-शैली गाँव की सामुदायिक बैठकी, जिसे वहाँ हल्मखड़ाल के जाता है, विद्वानों में वानस्पति जीवनता प्राप्त करती है।

ज्ञारखण्डी समाज की सामाजिक बैठकी, जैसे वहाँ हल्मखड़ाल और खलिहान तक फसल ढोने का कार्य पूरा टोला मिलकर निभाता है।

सब एक-दूसरे की मदद करते हैं। वह प्रथा-परम्परा हल्मईतह कहलाती है। दरअसल ज्ञारखण्डी

समाजिकता हल्मईतह और हल्मिहाल जैसे सरस परम्पराओं से ही जीवनता प्राप्त करती है।

ज्ञारखण्डी समाज की सामाजिक बैठकी, जैसे वहाँ हल्मखड़ाल विद्वानों में वानस्पति से गाँव के विवादों का निपटारा करते आ रहे हैं। वह उनकी ग्राम स्वशासन की सदियों पुरानी विवाद है।

ज्ञारखण्ड के पांचवीं अनुसूची वाले इलाकों में उपर्युक्त स्वशासन के प्रतिरोध व्यवस्था रही है।

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी जी इसका विवाद है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

सामुदायिकता में प्रबल आस्था

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी कृषि आधारित जन-जीवन की अर्थव्यवस्था सामुदायिकता पर निर्भर होती है। सुन्दर परिवार के कई जोड़े, हाथी ही कृषि उत्पादन की श्रम आधारित प्रणाली को संभाल पाते हैं। ज्ञारखण्ड के पांचवीं अनुसूची वाले इलाकों में उपर्युक्त स्वशासन के प्रतिरोध व्यवस्था रही है।

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी जी इसका विवाद है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

सामुदायिकता में प्रबल आस्था

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी कृषि आधारित जन-जीवन की अर्थव्यवस्था सामुदायिकता पर निर्भर होती है। सुन्दर परिवार के कई जोड़े, हाथी ही कृषि उत्पादन की श्रम आधारित प्रणाली को संभाल पाते हैं। ज्ञारखण्ड के पांचवीं अनुसूची वाले इलाकों में उपर्युक्त स्वशासन के प्रतिरोध व्यवस्था रही है।

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्ड के पांचवीं अनुसूची वाले इलाकों में उपर्युक्त स्वशासन के प्रतिरोध व्यवस्था रही है।

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर्तमान में टीआरआई के निदेशक पद पर हैं।)

ज्ञारखण्डी समाज-संस्कृती की धूरी ही सामुदायिकता है। वैसे भी द्वितीय वर्ष जीवन-शैली अस्थानी प्रणाली को कमज़ोर किया है किन्तु मूण्डा, हो और संताल बाहुल्य ग्रामीण इलाकों में वह स्वशासी व्यवस्था अभी भी जीवनत है। (लेक्कर साहित्यकार सह सेवि आइएस अधिकारी हैं। वर



पूर्व मंत्री समरेश सिंह की हालत नाजुक

बोकारो। बोकारो के पूर्व विधायक सह पूर्व मंत्री समरेश सिंह काफी दिनों से अवसर्प चल रहे हैं। चिकित्सकीय परामर्श एवं सेवा सुश्रुता अनवरत जरी है। आज गंभीर रूप से अस्वस्थ महसूस करने पर उन्हें बोकारो जनरल अस्पताल लाया गया जहाँ डॉटरों ने उनकी गंभीर स्थिति देखते हुए उन्हें क्रियाकल केर यूनिट में भर्ती किया है।

तम्बाकू के दुष्परिणामों के प्रति किया जागरूक

धनबाद। राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम अन्वरत रुकूल में कार्यक्रम के संचालन के लिए आज जिला नोडल पदाधिकारी धनबाद की अधिकात में जिला तम्बाकू नियंत्रण कांगण द्वारा जिले के सभी प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारियों एवं सभी सरकारी उच्च विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए एक दिवसीय संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई भारत सरकार की गाइडलाइन के क्रियान्वयन एवं सेतु इलायशूण स्कोर कार्ड भरने तथा तम्बाकू के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम में जिला तम्बाकू नियंत्रण कांगण के जिला नोडल पदाधिकारी डॉ. मनू दास, जिला परामर्शी राहुल कुमार, सशाल वर्कर शुभाकर मेंट्री व अन्य लोग मौजूद थे।

इन्वेंट्री वर्कर में सफल प्रतिभागियों को प्रदान किया सर्टिफिकेट

धनबाद। भूईफोड गोसईडीह लालबगता स्थित तेजस्विनी कौशल प्रशिक्षण केंद्र में झारखण्ड सरकार द्वारा संचालित तेजस्विनी परियोजना अंतर्नित वोकेशनल कौशल प्रशिक्षण सेवा प्रदाता द्वारा इन्वेंट्री वर्कर में सफल 46 प्रतिभागियों का सर्टिफिकेट वितरण किया गया। प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम में जिला सम्बन्धक 30म प्रकाश पाठक, बिंज एजुकेशन एंड लाइफ स्किल्स मास्टर द्वारा नोन्य कुमार, सेंटर मैनेजर मंटु कुमार आदि मौजूद थे।

गोनो के युवक की गुजरात नें नौत

धनबाद। हारिहरपुर गांव के युवक का शब गुजरात के वासाड रेस्टेन के समीन रुले परी पर मिलने की सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया। युवक विगत 5 नवंबर को मजदूरी करने में मुबई गया था, जहाँ एक कंपनी में एक दिन काम करने के बाद वह काम करने की विवरणी है।

वलसाद रेल पुलिस के अनुसार उसका शब गुलावर की देर रात रेलवे परी पर पाया गया। आकाश व्यक्त किया जा रहा की उसकी मौत की अतिकात द्वारा नहीं की जाएगी। युवक की पौधारी अपरेन्ट क्राक्षा ने युग्मता ध्वज उपर्युक्त क्राक्षा और उपर्युक्त समूह को युग्मता ध्वज दिलाई। कार्यक्रम में इंडी-वर्सस्ट्रीड्वी के तिवारीएर्डी; पी एंड एसजंजय कुमार एंडी-प्रोजेक्टस्ट्रेस्ट्रीचितर्जन महाअंतर्नी हुईं धर भागवत कथा के अंतिम दिन भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। अयोध्या से आये महामंडल लेश्वर अत्मानंद प्रकाश जी ने कहा मनुष्य का सवसे बड़ा धन चरित्र है। जिसका चरित्र बिंगड़ जाता है। उसका सब कुछ विवरण के बारे में यादव, संजय केरीर, पुरन पटवा, रजनीश राय, और गुरु की निंदा करने वालों का जीवन अग्रवाल, उपर्युक्त थे।

32 वर्षीय युवक का शब बटान

करतास। शनिवार को अहले सुबह करतास थाना क्षेत्र के हीरक रोड रित्यु अंजित होटल के बगाल की झाड़ियों में लागाए 25 वर्षीय युवक का शब पाया गया शब की सूचना मिलते ही यानीय ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। यानीय ग्रामीणों ने मामले की सूचना करतास थाना को दी।

